मातृभूमि का मान

हरिकृष्ण प्रेमी

लेखक परिचय – सुप्रसिद्ध नाटककार हरिकृष्ण 'प्रेमी' का जन्म सन् 1908 में मध्यप्रदेश स्थित गुना शहर में हुआ था। माखनलाल चतुर्वेदी के साथ 'त्यागभूमि' में पत्रकार के रूप में आपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की। पत्रकार एवं प्रकाशक के रूप में लाहौर में भी रहे। आपकी प्रथम रचना 'स्वर्ण विधान' एक गीतिनाट्य है जो 1930 ई. में प्रकाशित हुई।

'प्रेमी' जी एक सफल नाटककार हैं। आपके नाटकों में से 'बंधन', 'छाया', 'ममता' सामाजिक नाटक हैं, 'पाताल विजय' 'पौराणिक नाटक है।' 'प्रेमी' जी ने ऐतिहासिक नाटक ही सर्वाधिक लिखे हैं। उनमें से प्रमुख हैं,–'रक्षाबंधन', 'शिवासाधना', 'प्रतिशोध', 'आहुति', 'स्वप्नभंग', 'विषपान' और 'भग्न प्राचीर' । आपके प्रमुख एकांकी हैं – 'बेड़ियाँ', 'बादलों के पार', 'वाणी मंदिर', 'नया समाज', 'पाश्चात्य', 'यह भी खेल है', 'रूप शिखा', 'मातृभूमि का मान' एवं 'निष्ठुर न्याय'।

हरिकृष्ण 'प्रेमी' का रचना समय छायावाद के उत्तरार्द्ध से शुरू होता है। वह स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त राष्ट्रीय जागरण एवं आन्दोलनों का समय था। राष्ट्रीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, त्याग, तपस्या, सेवा, बलिदान एवं सामाजिक चेतना के लिए 'प्रेमी' जी ने अतीत में जाकर भारत की गौरवशाली परंपरा, उदात्त मानवीय मूल्यों, वीरता, साहस, पराक्रम आदि की रचनात्मक भाव भूमि तैयार की है। समय की आवश्यकता के अनुरूप आपने नाटक एकांकियों में – हिन्दू मुस्लिम सामंजस्य, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व का संदेश दिया। 'प्रेमी' जी ने मानवीय प्रेम और देशभक्ति की रसात्मक अनुभूति के लिए अपनी रचनाओं को आदर्शवादी और विद्रोही स्वरूप दिया है। उनकी रचनाओं में विद्रोह नकारात्मक न होकर नए सामाजिक वातावरण के निर्माण के लिए है। प्रेमी जी के नाटकों में स्वच्छन्दतावादी शैली का संयमित एवं अनुशासित प्रयोग हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से आपके नाटक बहुत सफल हैं। आप किसी समस्या का चित्रण करते हुए उसका हल अवश्य देते हैं और इस सम्बंध में गांधी जी के जीवन दर्शन का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा है।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत एकांकी में हाड़ा राजपूत वीर सिंह के बलिदान का चित्रण किया गया है। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का एकांकी है। मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा ने सेनापति अभय सिंह से बूँदी के राव हेमू के पास प्रस्ताव भेजा कि बूँदी मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले जिससे राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति का केन्द्रीयकरण किया जा सके। लेकिन राव हेमू ने स्पष्ट कर दिया था कि बूँदी स्वतंत्र रहकर महाराणाओं का आदर कर सकता है, अधीन रहकर सेवा नहीं कर सकता। हाड़ा प्रेम का अनुशासन मानते हैं, शक्ति का नहीं। वे प्रस्ताव ठुकरा देते हैं। दूसरी तरफ राणा लाखा नीमरा के मैदान में बूँदी से पराजित होने के कलंक को धोने के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि ''जब तक बूँदी दुर्ग पर ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगा'' लाखा की प्रतिज्ञा के निमित्त मेवाड़ में ही नकली बूँदी दुर्ग बनाकर उसके विध्वंस से व्रत पालन की योजना बनाई जाती है। युद्ध में वास्तविकता लाने हेतु वीरसिंह सहित कुछ सैनिक नकली दुर्ग की रक्षा करते हैं। वीरसिंह उसके साथी नकली बूँदी को प्राणों से भी प्रिय मानते हैं क्योंकि बूँदी हाड़ाओं की मातृभूमि है। वे बूँदी का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। अन्त में मेवाड़ की भारी सेना के सामने वीरसिंह और साथी नकली बूँदी की रक्षा करते-करते अपना बलिदान कर देते हैं। इस बलिदान से राजपूतों की एकता का मार्ग प्रशस्त होता है।

एकांकी का प्रमुख चरित्र वीरसिंह है। नकली ही सही परन्तु बूँदी उसकी मातृभूमि है और वह मातृभूमि का अपमान नहीं सह सकता। बूँदी के सम्मान में अपने प्राण देकर उसने सिद्ध कर दिया कि जन्मभूमि प्राणों से भी प्रिय है। यह एकांकी देश प्रेम की प्रेरणा देता है और मातृभूमि की सेवा हेतु उसकी आन-बान-शान के लिए प्राणाहुति देने का भाव जगाता है।

मातृभूमि का मान

पहला दृश्य

स्थान : बूँदीगढ़। बूँदी के राव हेमू अपने कमरे में मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बात कर रहे हैं।

अभयसिंह : महाराव, सिसोदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है।

राव हेमू : तो फिर आप बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए हैं?

अभयसिंह : महाराव, हम राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है ? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें।

राव हेमू : और वह केंद्र हैं - चित्तौड़।

अभयसिंह : इसमें भी कोई संदेह है, महाराव! चित्तोड़ का गत गौरव फिर लौटा है। जो राजवंश पहले मेवाड़ के अधीन थे, महाराणा लाखा चाहते हैं, आज भी उसी तरह रहें। बूँदी राज्य भी सदा से मेवाड़ के आश्रित.....।

राव हेमू : बूँदी राज्य सदा से मेवाड़ के आश्रित, यह तुम क्या कहते हो, अभयसिंह जी !हाड़ा वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा। चाहे वह विदेशी शक्ति हो, चाहे वह मेवाड़ का महाराणा हो।

अभयसिंह : महाराव, आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह ! प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर नाज है। इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उसका कल्याण है। रह गई बात एक माला में गूँथने की, सो वह माला तो बनी है। हाँ, उस माला को तोड़ने का श्रीगणेश हो गया है।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा-वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं, । मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति-भाइयों पर अपनी तलवार आज़माने की इच्छा हुई है, तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। बूँदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता।

अभयसिंह : तो मैं जाऊँ।

राव हेमू : आपकी इच्छा।

(दोनों का दो तरफ प्रस्थान)

पट परिवर्तन

दूसरा दृश्य

(स्थान - चित्तोड़ का राजमहल। महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं)

लाखा : मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास में मैंने कलंक का टीका लगाया है। इस बार मुट्ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उसमें मेवाड़ के आत्म-गौरव को कितनी ठेस पहुँची है, यह मेरा हृदय जानता है।

(अभयसिंह का प्रवेश और महाराणा को अभिवादन करना)

अभयसिंह : महाराणाजी, दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंह जी, आज मैं दरबार में नहीं जाऊँगा। आप जानते हैं कि जब से हमें नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है। बाप्पा रावल और वीरवर हम्मीर का रक्त जिसकी धमनियों में बह रहा हो, वह प्राणों के भय भाग जाए, यह कितने कलंक की बात है।

अभयसिंह : किंतु जरा सी बात के लिए आप इतना शोक क्यों करते है, महाराणा? हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर आक्रमण कर दिया। आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। आप तो तब भी प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे, किंतु हमीं लोग आपको वहाँ से खींच लाए। इसमें आपका क्या अपराध है, और इसमें मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कौन सा कारण है ?

महाराणा : जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी अपयश, कलंक या अपमान का कारण नहीं होता। किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवत रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है। सुनो अभयसिंह जी, मैं अपने मस्तक के इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूँ।

अभयसिंह : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हैं।

महाराणा : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुँचा है। महारावल बाप्पा का वंशज मैं, लाखा, प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।

अभयसिंह : महाराणा! छोटे-से बूँदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? बूँदी को उसकी धृष्टता के लिए तो दंड दिया ही जाएगा, लेकिन हाड़ा लोग कितने वीर हैं! युद्ध करने में वे यम से भी नहीं डरते। इसमें संदेह नहीं कि अंतिम विजय हमारी होगी, किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे। इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करें।

महाराणा : आप क्या कहते हैं, सेनापति ? क्या कभी आपने सुना है कि सूर्यवंश में पैदा होने वाले पुरुष ने अपनी प्रतिज्ञा को वापस लिया हो ? 'प्राण जाएँ पर वचन न जाए'- यह हमारे जीवन का मूल-मंत्र है। जो तीर तरकश से निकलकर, कमान पर चढ़कर छूट गया, उसे बीच में नहीं लौटाया जा सकता। मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ। और इस बात की हाल के युद्ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता में हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है - वह पूर्ण होनी ही चाहिए।

(नेपथ्य में गान)

ये सागर से रत्न निकाले। युग-युग से हैं गए सँभाले।
इनसे दुनिया में उजियाला। तोड़ मोतियों की मत माला।

ये छाती में छेद कराकर, एक हुए हैं हृदय मिलाकर।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियों की मत माला।

(गाते गाते चारणी का प्रवेश)

महाराणा : तुम कुछ गा रही थी, चारणी ? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की शृंखला बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थी। किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ।

चारणी : यह आप क्या कहते हैं महाराणा ? आपके विवेक पर सबको विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से आप हाड़ा शक्ति और साधन में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें।

महाराणा : चारणी, तुम बहुत देर से आई!

अभयसिंह : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूँदी के गढ़ को जीत न लें अन्न-जल ग्रहण न करेंगे।

चारणी : दुर्भाग्य! (कुछ सोचकर) महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। देश का कोई शुभचिंतक इस विद्वेष की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता।

अभयसिंह : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए।

चारणी : उसका एक ही उपाय है। वह यह कि यहीं पर बूँदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए। महाराणा उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है?

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूँगा। किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा। सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने का प्रबंध करें।

(सबका प्रस्थान)

पट प्रदर्शन

तीसरा दृश्य

(चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश, नकली दुर्ग का मुख्य दरवाजा महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश।)

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया ? ठीक बन गया है न ?

महाराणा : क्यों न बनता ! निसंदेह यह ठीक बूँदी-दुर्ग की हू-ब-हू नकल है। अब इस पर चढ़ाई करने का खेल खेला जाए। इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष नहीं होगा, लेकिन अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा। उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से सोचना होगा कि बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह बाध्य किया जाए।

अभयसिंह : निश्चय ही महाराज ! शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे? इस दुर्ग में कोई तो हमारा पथ-प्रतिरोध करने वाला होना चाहिए।

अभयसिंह : हाँ, खेल में भी तो कुछ वास्तविकता आनी चाहिए। मैने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे, जो बंदूकों से हम लोगों पर छूँछे वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा और फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा, अब हम चलें।

(दोनों का प्रस्थान । दूसरी ओर से वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश)

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियो ! तुम देख रहो हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी : हाँ सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूँदी का दुर्ग है।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं किंतु क्या हम लोग अपनी मातृभूमि का अपमान होने देंगे ? यह हमारे वंश के मान का मंदिर है। क्या इसे मिट्टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी : किंतु यह तो नकली बूँदी है।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें ! नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहाँ बूँदी का अपमान आसानी से नहीं किया जा सकता। आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा, यहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि सिसोदियों और हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।

तीसरा साथी : लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं। क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है। हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुँचाना चाहिए।

वीरसिंह : जिस जन्मभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने उनके नमक का बदला दिया है। लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देंगे। आज ऐसा ही अवसर आ पड़ा है।

पहला साथी : निश्चय ही जहाँ पर बूँदी है, वहाँ पर हाड़ा है, और जहाँ पर हाड़ा है, वहाँ पर बूँदी है। कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता। जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

वीरसिंह : मेरे वीरो ! तुम अग्नि कुल के अँगारे हो। अपने वंश की आभा को क्षीण न होने देना। प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य-पताका को स्थापित न होने देंगें।

सब लोग : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज न फहराने देंगे।

वीरसिंह : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती। जिस बूँदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं, उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है। चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें।

पट परिवर्तन

चौथा दृश्य

(स्थान : बूँदी के नकली दुर्ग का बंद द्वार। महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : सूर्य डूबने को आया। यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूँदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। वीरसिंह और उसके मुट्ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

अभयसिंह : हाँ महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो-घड़ी में खेल खत्म हो जाएगा, लेकिन हमें छूँछे वारों का मुकाबला करने के बजाय हाड़ाओं के अचूक निशानों का सामना करना पड़ा। यद्यपि ये लोग गिनती में थोड़े हैं, किंतु इन्होंने दीवारों की आड़ में उपयुक्त स्थान बनाकर हम पर गोली और तीर बरसाना प्रारंभ कर दिया। हमारी सेना इस आकस्मिक प्रहारों से भौंचक्की हो गई। अब दुर्ग के भीतर के हाड़ाओं की युद्ध-सामग्री समाप्त हो गई है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी होने में कुछ ही क्षणों का विलम्ब है।

महाराणा : यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई। यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना झंडा फहराने का अवसर मिल जाता, तो मुझे जरा भी संतोष न होता, और सच पूछो तो मुझे वीरसिंह की वीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता था कि ऐसे वीर के प्राणों को किसी प्रकार रक्षा हो सकती।

अभयसिंह : मैंने भी जब दुर्ग से अग्नि वर्षा होती देखी, तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था और कुछ क्षणों के लिए सफेद झंडा फहराकर मैंने युद्ध रोक दिया था। उसके पश्चात् मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह की उसके साहस के लिए प्रशंसा की। साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ । तुम महाराणा के नौकर हो, तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार न उठाना चाहिए। किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है। हम उस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं। महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं, तो खुशी से ले लें। लेकिन हम इतने कायर और निष्प्राण नहीं है कि अपनी आँखों से बूँदी का अपमान होते देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पताका फहराएगी।

महाराणा : निश्चय ही इन वीरों की जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय है। यह मैं जानता हूँ कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा करने का कोई उपाय नहीं है। इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी। वह देखो दुर्ग की उस दरार में खड़ा हुआ वीरसिंह कितनी फुर्ती से बाण-वर्षा कर रहा है। अकेला ही हमारे सैकड़ों सैनिकों की टोली को आगे बढ़ने से रोके हुए है।

धन्य हैं ऐसे वीर ! धन्य हैं वह माँ जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया। धन्य है वह भूमि ! जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं।

(जोर का धमाका और प्रकाश होता है)

महाराणा : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण-पखेरु उड़ गए। बूँदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए। अब हम विजयश्री प्राप्त कर सके। जाओ दुर्ग पर मेवाड़ का पताका फहराओं और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहाँ ले आओ।

(अभयसिंह का प्रस्थान)

महाराणा : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है। व्यर्थ के दंभ ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली।

(चारणी का प्रवेश)

चारणी : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी। अब तो आपने अपने सिर का कलंक का टीका धो लिया। यह देखिए बूँदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजय-पताका फहरा रहे हैं। वह सुनिए, मेवाड़ की सेना में विजय-दुंदुभि बज रही है।

महाराणा : चारणी, क्यों पश्चात्ताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो ? न जाने किस बुरी सायत में मैंने बूँदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था। वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं, मेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है। मैं देखता हूँ, ऐसी वीर जाति को अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है।

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूँदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता ?

(वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश)

महाराणा : (शव के पास बैठते हुए) चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा माँगता हूँ, किंतु क्या बूँदी के राव तथा हाड़ा-वंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा ?

(राव हेमू का प्रवेश)

राव हेमू : क्यों नही महाराणा ! हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा! सब देश, जाति और वंश की मान-रक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं। हमारी तलवार अपने ही स्वजनों पर न उठनी चाहिए। बूँदी के हाड़ा सुख और दुख में चित्तोड़ के सिसोदियों के साथ रहे हैं और रहेंगे। हम सब राजपूत अग्नि के पुत्र हैं, हम सबके हृदय में एक ज्वाला जल रही है। हम कैसे एक दूसरे से पृथक् हो सकते हैं। वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

महाराणा : निश्चय ही महाराज ! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएँ। (सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं।)

(पटाक्षेप)

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. बूँदी के राव मेवाड़ के अधीन क्यों नहीं रहना चाहते?
2. मुट्ठी भर हाड़ाओं ने किसे पराजित किया था ?
3. वीरसिंह का प्राणान्त कैसे हुआ ?
4. ''अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।'' यह कथन किसका है ?
5. महाराणा लाखा वीरसिंह के किस गुण से प्रसन्न हुए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. महाराणा लाखा ने कौन-सी प्रतिज्ञा की थी ?
2. चारणी ने राजपूत-शक्तियों के विषय में महाराणा से क्या कहा था ?
3. वीरसिंह ने जन्म-भूमि की रक्षा के विषय में अपने साथियों से क्या कहा था ?
4. महाराणा अपनी विजय को पराजय क्यों कहते हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'वीरसिंह का चरित्र मातृभूमि के सम्मान की शिक्षा देता है' इस कथन को सिद्ध कीजिए।
2. महाराणा और अभयसिंह के चरित्र की दो-दो विशेषताएँ लिखिए।
3. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए -
   1. ये सागर से रत्न निकाले ..... तोड़ मोतियों की मत माला।
   2. ''नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है ..... हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।''
   3. हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। ..... वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

भाषा अध्ययन -

प्रश्न 1. सामासिक पदों का विग्रह कर समास लिखिए :-

राजपूत, जन्मभूमि, महाराजा, सेनापति, बाण-वर्षा, आदरभाव।

ध्यान दीजिएए -

बहुव्रीहि समास - जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं, बहुव्रीहि समास होता है।

जैसे- कमल नयन - कमल जैसे नयनों वाला (राम)
पंचानन-पाँच आनन हैं जिसके (शिव)
दशानन-दस आनन हैं जिसके (रावण)
लंबोदर-लंबा है उदर जिसका (गणेश)
चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी (विष्णु)
त्रिवेणी-तीन नदियों का संगम स्थल (प्रयाग)
दिगंबर-दिशाएँ है वस्त्र जिसकी (शिव)
मक्खीचूस-मक्खी को चूसता है जो (कंजूस)

द्वन्द्व समास – जिस समास में दोनो पद प्रधान हों, वहाँ द्वन्द्व समास होता है। दोनों पदों को मिलाते समय योजक लुप्त हो जाता है।

जैसे– अन्न–जल = अन्न और जल

अमीर–गरीब = अमीर और गरीब

ऊँच–नीच = ऊँच और नीच

गंगा–यमुना= गंगा और यमुना

नर–नारी = नर और नारी

माता–पिता = माता और पिता

रात–दिन= रात और दिन

प्रश्न 2. बहुब्रीहि समास उदाहरण देकर समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. बाप्पारावल और हम्मीर की अजेय वीरतापूर्ण उपलब्धियों पर प्रामाणिक जानकारी एकत्र कीजिए।
2. अपने प्रदेश के बलिदानी वीरों पर नाटिका तैयार कर विद्यालय में मंचन कीजिए।
3. राजस्थान के महाराणा प्रताप और अन्य समकालीन वीरों की यश गाथा पढ़िए और उनके चित्र संकलित कीजिए।

शब्दार्थ

पथ प्रतिरोध = रास्ता रोकना। **व्यथित** = दुखी। **व्याघात** = बाधा, अड़चन। **सायत** = लग्न, समय। **निष्प्राण** = प्राण रहित। **धृष्टता** = उद्दंडता। **विध्वंस**=विनाश। **पौरुष** = पराक्रम, शौर्य।